

## सूरह अस्र<sup>[1]</sup> - 103



सूरह अस्र के संक्षिप्त विषय  
यह सूरह मक्की है, इस में 3 आयतें हैं।

- इस का आरंभ ((अस्र)) अर्थात् (युग) की शपथ से होता है, इस लिये इस का नाम सूरह अस्र रखा गया है।<sup>[1]</sup>
- इस सूरह में मात्र तीन ही आयतें हैं फिर भी इस के अर्थ में पूरे मानव जाति के उत्थान और पतन का एतिहास आ गया है। और मार्गदर्शन का मीनार बन कर व्यक्ति तथा जातियों और धार्मिक समुदायों को सीधी राह से सूचित कर रही है। ताकि वह अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लें, और ग़लत राह पर पड़ कर विनाश के गढ़े में गिरने से बच जायें।
- युग की गवाही इस के लिये प्रस्तुत की गई है कि यदि मनुष्य के कर्म ईमान से खाली हों तो वह विनाश से नहीं बच सकता।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त  
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. निचड़ते दिन की शपथ!
2. निःसंदेह इन्सान क्षति में है।<sup>[2]</sup>

وَالْعَصْرِ

إِنَّ الْإِنْسَانَ لِرَبِّهِ خَيْرٌ

- 1 यद्यपि यह एक छोटी सी सूरह है परन्तु इस में ज्ञान का एक समुद्र समाया हुआ है। इस सूरह का विषय इस बात पर सावधान करना है कि समस्त मानव जाति (इन्सान) विनाश की ओर जा रही है। इस से केवल वही लोग बच सकते हैं जो ईमान लाये और अच्छे कर्म किये।
- 2 (1-2) "अस्र" का अर्थ: निचोड़ना है। युग तथा संध्या के समय के भाग के लिये भी इस का प्रयोग होता है। और यहाँ इस का अर्थ युग और दिन निचड़ने का समय दोनों लिया जा सकता है। इस युग की गवाही इस बात पर पेश की गई है कि: इन्सान जब तक ईमान (सत्य विश्वास) के गुणों को नहीं अपनाता विनाश से सुरक्षित नहीं रह सकता। इसलिये कि इन्सान के पास सब से मूल्यवान् पूँजी समय है जो तेज़ी से गुज़रता है। इसलिये यदि वह परलोक का सामान न करे तो अवश्य क्षति में पड़ जायेगा।

3. अतिरिक्त उन के जो ईमान लाये।  
तथा सदाचार किये, एवं एक दूसरे  
को सत्य का उपदेश तथा धैर्य का  
उपदेश देते रहे।<sup>[1]</sup>

إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ  
وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ

1 इस का अर्थ यह है कि परलोक की क्षति से बचने के लिये मात्र ईमान ही पर  
बस नहीं इस के लिये सदाचार भी आवश्यक है और उस में से विशेष रूप से  
सत्य और सहन शीलता और दूसरों को इन की शिक्षा देते रहना भी आवश्यक  
है। (तर्जुमानुल कुर्आन, मौलाना आज़ाद)